☆ मैं बीज बो रहा हूं। पिछले कई-कई जन्मों से, युगों-युगों से और इसी वजह से पृथ्वी पर अभी अध्यात्म का प्रकाश है, अभी ज्ञान की चेतना है, अभी साधना की अनुभूतियां हैं।

☆ इसके लिए पिछले कई जन्मों से मैंने अथक प्रयत्न किए हैं और शिष्यों के रूप में अग्नि बीज बोए हैं। अपने हाथों से, परिश्रम के पसीने की बूंदों से भिगो कर।

☆ ध्यान रहे, कि ये बीज जमीन के ऊपर ही न रह जाएं, ये बीज व्यर्थ ही न चले जाएं, ये जमीन में गड़ जाएं, ये मिट्टी में मिल जाएं।

☆ इनमें अहंकार न रहे, अपने-आप को बचाने की युक्ति न निकाल लें, ये तो पूरी तरह से रच-पच जांए, मिल जाएं और अंततः विसर्जित हो जाएं।

☆ ऐसा हुआ, तो मैं पूरी पृथ्वी को सिद्धाश्रम बनाकर दिखा दूंगा।

☆ वेदव्यास अपनी मृत्यु शैया पर डबडबायी आंखों से कह रहे थे, कि- ''काश! मुझे कुछ सही और वास्तविक शिष्य मिल जाते।

☆ गोरखनाथ ने कहा - 'समर्पित शिष्य मिल जाएं यह आश्चर्य सा हो गया है।'

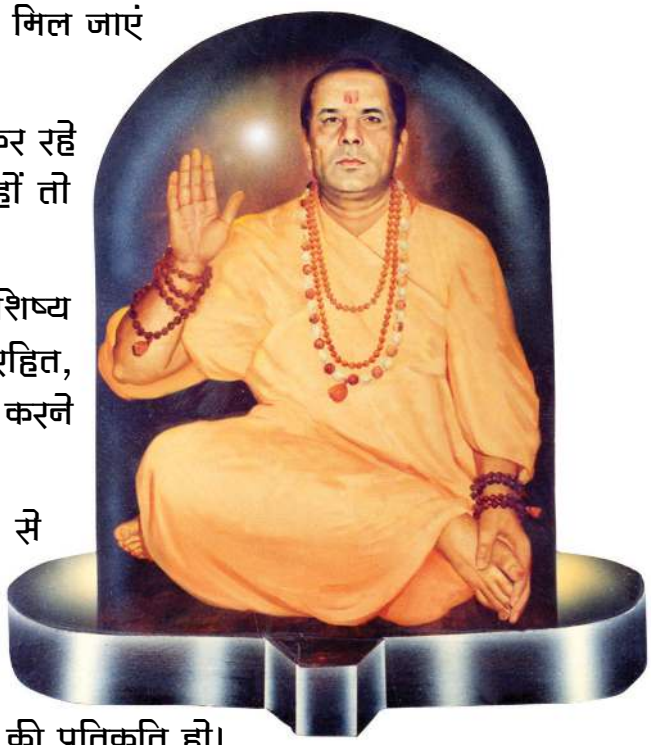

☆ शंकराचार्य व्यथित भाव से उच्चरित कर रहे थे, कि- 'यदि कुछ शिष्य मेरे पास हों तो मैं बहुत कुछ कर लूं।'

☆ वे सब सही थे, क्योंकि समर्पित शिष्य की पहिचान ही अलग है, अहंकार रहित, सर्वस्व समर्पण युक्त, जीवन को फना करने का हौसला रखने वाला।

☆ वह गुरु के व्यक्तित्व में पूरी तरह से ढल जाता है, वैसी ही चाल, वैसी ही बोलने की अदा, वैसा ही बैठने का ढंग, वैसा ही व्यवहार, चिन्तन, विचार और लक्ष्य... ऐसा लगे की गुरु की प्रतिकृति हो।

☆ ऐसे ही मात्र बारह शिष्य मिल जाएं, तो मैं पूरे ब्रह्माण्ड को बदल देने का हौसला रखता हूं। बस शिष्य आगे आवें, और मुझे प्राप्त हो जाएं।

☆ तुम्हें जीने का सलीका नहीं है, जीवन को घूंट-घूंट पीने का ज्ञान नहीं है, जीवन को आनन्द में, मस्ती में डूबोकर मतवाली चाल से बढ़ने की जानकारी नहीं है।

☆ मेरी उपस्थिति में तो तुम्हारे हृदय धड़कते हैं, पर मेरी अनुपस्थिति में भी तुम्हारे हृदय धड़कने चाहिए। मेरी अनुपस्थिति में भी मुझमें डूबे रहने की कला सीखिए।

☆ मेरी अनुपस्थिति को भी उपस्थिति बना लेने की युक्ति जान लीजिए।

☆ मौन रहकर प्रार्थना करना सीखो, आंखें बन्द कर देखने का अभ्यास करो, बिना बोले बातचीत करने की कला प्राप्त करो, मेरी अनुपस्थिति में भी मेरा साहचर्य अनुभव करने की विद्या जानो।

☆ ऐसा होने पर तुम जहां पर भी होओगे मैं उपलब्ध रहूंगा - जागते, सोते, नींद लेते, मुस्कुराते, रोते और छलछलाते, सभी रूपों में, हर समय, सभी स्थानों पर और यही तो परमहंसावस्था है।

शिष्य धर्म

- गुरु कुछ करता ही नहीं, समुद्र चलकर गंगोत्री के पास नहीं पहुंचता। शिष्य को गुरु के पास जाना पड़ता है और उससे ज्ञान प्राप्त करना होता है।
- सेवा समर्पण और श्रद्धा - ये तीनों ही रास्ते हैं जिनके माध्यम से शिष्य अपने खून को शुद्ध कर सकता है।
- जो गुरु कहे वह करे, उसे सेवा कहते हैं। जो तुम्हारी मर्जी हो वह करना कदापि गुरु सेवा नहीं है।
- शिष्य को ज्ञान देने से पहले उसका अहं गलाना जरूरी है। शिष्य का कर्तव्य है कि वह इस कार्य में गुरु का पूरा सहयोग करें।
- शिष्य को चाहिए कि वह पाद पद्म न बने, उसे चाहिए वह विवेकानन्द बने और उसके लिए सर्वोत्तम उपाय है श्रद्धा एवं समर्पण।
- ज्ञान के पुंज को प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि शिष्य को कसौटी पर कसा जाए। शिष्य को चाहिए कि वह गुरु की हर कसौटी पर उतरे।
- शिष्य पर गुरु का ऋण है क्योंकि गुरु शिष्य को ज्ञान देता है। ज्ञान केवल गुरु की सेवा से प्राप्त हो सकता है।
- शिष्य के मानस में, चिंतन में, विचार में, ज्ञान की गरिमा स्थापित गुरु करता है, इसलिए शिष्य का धर्म है कि वह गुरु सेवा करे और ज्ञान प्राप्त करें।
- शिष्य का लक्षण, शिष्य का चिन्तन, शिष्य का विचार मधुर होना चाहिए हर क्षण गुरु की आज्ञा का पालन करें किसी भी तर्क या विर्तक में न फंसें। सेवा, समर्पण और श्रद्धा से ही तुम लोहे से कुन्दन बन सकते हो।
- शिष्य को चाहिए कि गुरु जो भी मंत्र दे, उसे पूर्ण भक्तिभाव से ग्रहण करें, कभी भी मन में गुरु या मंत्र के प्रति कुतर्क या अश्रद्धा न लावें।
- गुरु तो हर क्षण ही शिष्य को अपने समकक्ष बनाने का प्रयास करते हैं, और इसी कारण उन्हें स्वयं सर्वप्रथम शिष्य के अनुरूप स्वरूप धारण करना पड़ता है, परन्तु यह शिष्य की अज्ञानता होती है, जो वह गुरु को सामान्य मनुष्य के रूप में देखता है, उसके लिए ऐसा चिन्तन दुर्भाग्यपूर्ण होता है।